बाज नैं जुआब दिया, "राज्जा ! मन्नै थारी बड्डी-२ बात्तां तै के लेणा सै ? मन्नैं तै भूख लाग रूही सै। आप मेरा खाणा मेरे तै सोंप द्यो। जै मैं भूख तै मर ग्या तै इस हत्या का पाप भी आप कै ए लाग्गैगा।

"थम इब्बै मेरी रसोई मैं चाल्लो। ओड़ै तरां-तरां के पकवान बण रूहे सैं, वे खा कै आपणी भूख मिटा लियो।"

बाज नैं कही, "मैं तै मांस खाण आला जीव सूं। थारी गेल्लां ओड़ै जा कै के करूंगा ? मन्नैं तै कबूत्तर उलटा दे द्यो। इसनैं खा कै ए मैं आपणी भूख मिटाऊंगा।"

राज्जा नैं सोच्ची- मैं तै बड़े धरम संकट मैं फँस ग्या। कबूत्तर नैं ना बचाऊं तै यो बिचारा जान तै ज्यागा। कबूत्तर नैं ना छोड्डूं तै बाज भूक्खा मर ज्यागा।" माड़ी वार वे सोच-बिचार करदे रहे।

फेर वे भित्तर-ए-भित्तर हांसे। उन नैं बाज तै कहीं, "थम कबूत्तर की जंगा मेरा मांस ले ल्यो।" जिब्बै ए राज्जा नैं सेवकां कै हाथ एक तराज्जू मंगाई। उन नैं एक पलड़े मैं कबूत्तर बिठाया अर दूसरे पलड़े मैं चक्कू तै आपणी देही का मांस काट-काट कै धरण लाग्गे।

पर यो के ? राज्जा नैं आपणे सरीर का आद्धा मांस काढ़ कै पालड़े पै धर दिया। फेर भी कबूत्तर आल़ा पलड़ा ए भारी रह्या। राज्जा मेघरथ की देही जाणुं लहू मैं न्हाई होई बैट्ठी थी। ताक्कत घटती जा थी। फेर भी उन नैं धीरज ना छोड्या।

आक्खर मैं राज्जा हिम्मत करकै पलड़े कान्नीं गए। अर वे आपणे-आप पालड़े मैं जा कै बैठ गे। भित्तर-ए-भित्तर उननैं संतोस था अक उनका सरीर एक कबूत्तर की जान बचाण मैं काम आण लाग रह्या सै।

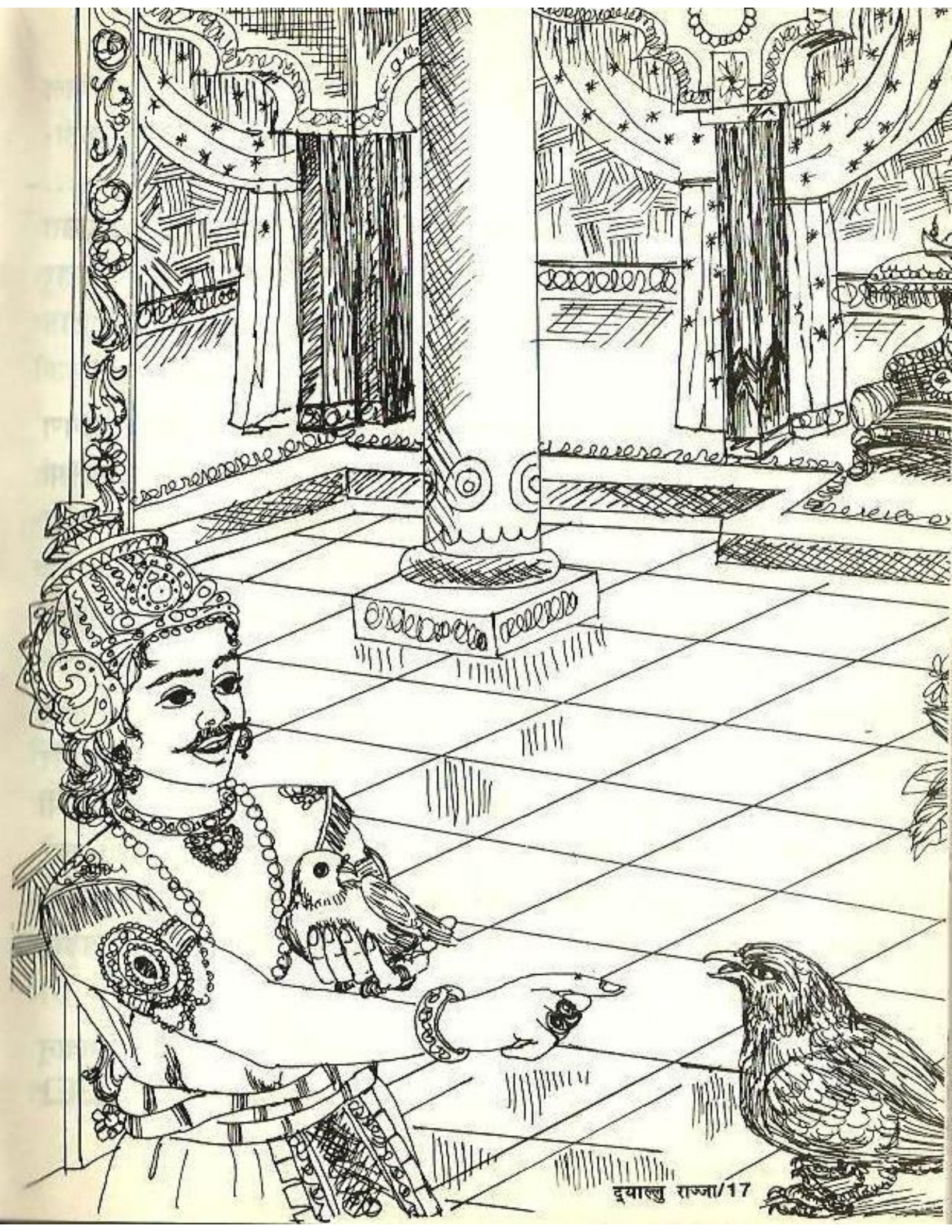

दरबार के लोग यो सीन देख कै हाहाकार करण लाग्गे। सब नैं मिल कै राज्जा आग्गै हाथ जोड़े अक यो काम मतन्या करो। सबनै कही- "म्हाराज! यो बाज दुष्ट सै। हम इसनैं इब्बे ए मार कै भजा देंगे .....- पर आप आपणे आप नैं कुरबान मत न्या करो। राज्जा आपणी बात तै कत्ती ए ना डिग्गे। उन नैं आपणे मरण का डर ना था। वे तै भित्तर -ए-भित्तर राज्जी थे, अक आपणी कुरबानी कर कै वे एक पराणी की जान बचावैं सैं।

चाणचक ओड़ै एक देवता परगट होया। ओ राज्जा तै माफी मांगण लाग्या। पलक झपकतें ए सारा सीन बदल ग्या। राज्जा नैं अर सारे दरबारियां नैं देख्या, ओडै ना तै कबूत्तर सै अर ना बाज। फेर राज्जा नैं आपणा सरीर देख्या तै बेरा ना क्यूकर उनका सरीर भी पहलां बरगा हो ग्या था।

देवता नैं झुकते होए कही-"म्हाराज! मैं देवां की सभा मैं बैठ्या था। म्हारे राज्जा इंदर नैं आपके दया-भाव की घणी ए तारीफ करी थी। न्यूं कही अक सारी धरती पै मेघरथ बरगा दया करण आला ओर कोए राज्जा कोन्यां। मन्नैं यकीन-ए ना आया। मैं थारा हिंतान लेण खातर चाल पड़्या। बाज का रूप धर कै, मैं आड़ै आया था। ओ कबूत्तर भी मेरी माया थी। मन्नैं थारा हिंतान लिया। हिंतान मैं आप कत्ती खरे लिकड़े। सार्चे-ए आप जीस्सा दया करण आला इस दुनिया मैं दूसरा कोन्यां। न्यूं कह् कै ओ भी गैब हो ग्या। इस बात तै राज्जा की बड़ाई चारूं कान्नीं दूर-दूर ताईं होण लाग्गी।

बाद मैं राज्जा मेघरथ जैन धरम के सोल़हमें तीरथंकर भगवान् शांतिनाथ बणे। ❑❑

अनाथ कूण सै

पराणे जमान्ने की बात सै। मगध देस का राज्जा था-सरेणिक। दूर-दूर ताईं ओ घणा मस्हूर था। चारूं कान्नीं उसकी जै-जैकार होया करती। उसकै घमण्ड हो ग्या था। उन्नै बाण पड़ गी, अक आपणे आग्गै किस्से की बात कोन्यां सुणनी।

उस राज्जा नै हांडण मैं सुआद आया करता। एक बर सरेणिक हांडता-हांडता एक बाग मैं पहौंच ग्या। बाग घणा सुथरा अर हर्‌या-भर्‌या था। राज्जा ओड़ै माड़ी वार ठैर कै, अराम करणा चाह्‌वै था। चाणचक बाग के एक कूणे तै महक आई, अर राज्जा नैं खींच कै लेगी। ओ महक कान्हीं चाल्लण लाग्या। माड़ी दूर जा कै नैं उत्ती दीख्या–अक एक साद्‌धू आंख मीच कै ध्यान करण लाग रह्‌या सै। उसकी उमर पूरी ठेठ जुआनी की थी। उसकै मूं तैं धरम का तेज चिमकै था। ईसे भोले, नीडर अर चिमकते होए मूं आले साधू नैं देख कै, राज्जा पै घणा-ए असर होया। ओ उसके धोरै डिगर ग्या, अर ओड़ै-ए बैठ ग्या।

माड़ा-हा टैम बीत्या। जुवान साधू नै आपणी मीट्‌ठी हांसी तै राज्जा का दिल जीत लिया। राज्जा नैं बूज्झी, "मुनी जी..... थारी उमर तै साधुआं बरगी करड़ी ज्यंदगी बिताण कै लायक कोन्यां। फेर थम नैं इस भरी जुवानी मैं साधू बणन की क्यां खातर सोच्ची?"

साधू बोल्या, "राज्जा.... मैं के करता। मैं अनाथ था अर मेरा इस दुनिया मैं कोए भी कोन्यां था। साधू बणन के अलावा ओर मैं कर भी के सकूं था?"

सरेणिक नैं साधू का जुआब जँच्या कोन्यां। भित्तर-ए-भित्तर दरद भी होया। सोच्चण लाग्या–मैं तै आपणे आप नैं घणा हे बड्डा राज्जा जाणूं था। मेरे राज मैं ईसे-ईसे माणस लाचार हो कै, साधू बणैं सैं। धिक्कार सै मन्नैं अर मेरे राज-पाट नैं।

सरेणिक नै कही–"मुनी जी! मैं थारा नाथ बणूं सूं। मैं थमनैं लाचार कोन्यां रैहण द्यूं। थम यो साधू का बाणा छोड द्यो, अर मेरी गेल्लां महलां मैं चाल्लो। मैं थम नैं माल्ला-माल कर द्यूंगा।"

साधू नैं जुआब दिया, "जो आप्पै अनाथ होवै, ओ दूसरां का नाथ क्यूकर हो सकै सै?"

या बात सुण कै राज्जा कै पतंगे लड़गे। बोल्या, "ईब ताईं तन्नै मैं पिछाणा कोन्यां। मैं सारी दुनिया मैं मस्हूर राज्जा सरेणिक सूं।"

"मैं थम नैं आच्छी तरियां जाणूं सूं। ईसी बात कोन्यां अक मैं थम नै गौल़ता कोन्यां।" साधू नैं कही।

राज्जा नैं बूज्झ्या, अक "जाणै सै तै फेर मैं अनाथ क्यूकर ला लिया? मैं तै आपणी परजा का नाथ सूं अर कती लोह-लाट। कोए हला नहीं सकदा मेरी गद्दी नैं।"

"रै राज्जा! जिस गद्दी के घमण्ड मैं तू चौड़ा हो रह्या सै वा मरण के दुख नैं दूर कर सकै सै? तेरी धन-दोलत तन्नैं बुढापे तै बचा सकै सै? तेरा कुणबा अर तेरी परजा तन्नैं बेमार होण तै बचा सकै सै?" साधू नै बूज्झ्या।

राज्जा धोरै इस बात का कोए जुआब ना था। ओ बोल-बाल्ला बैठ्या रह्या।

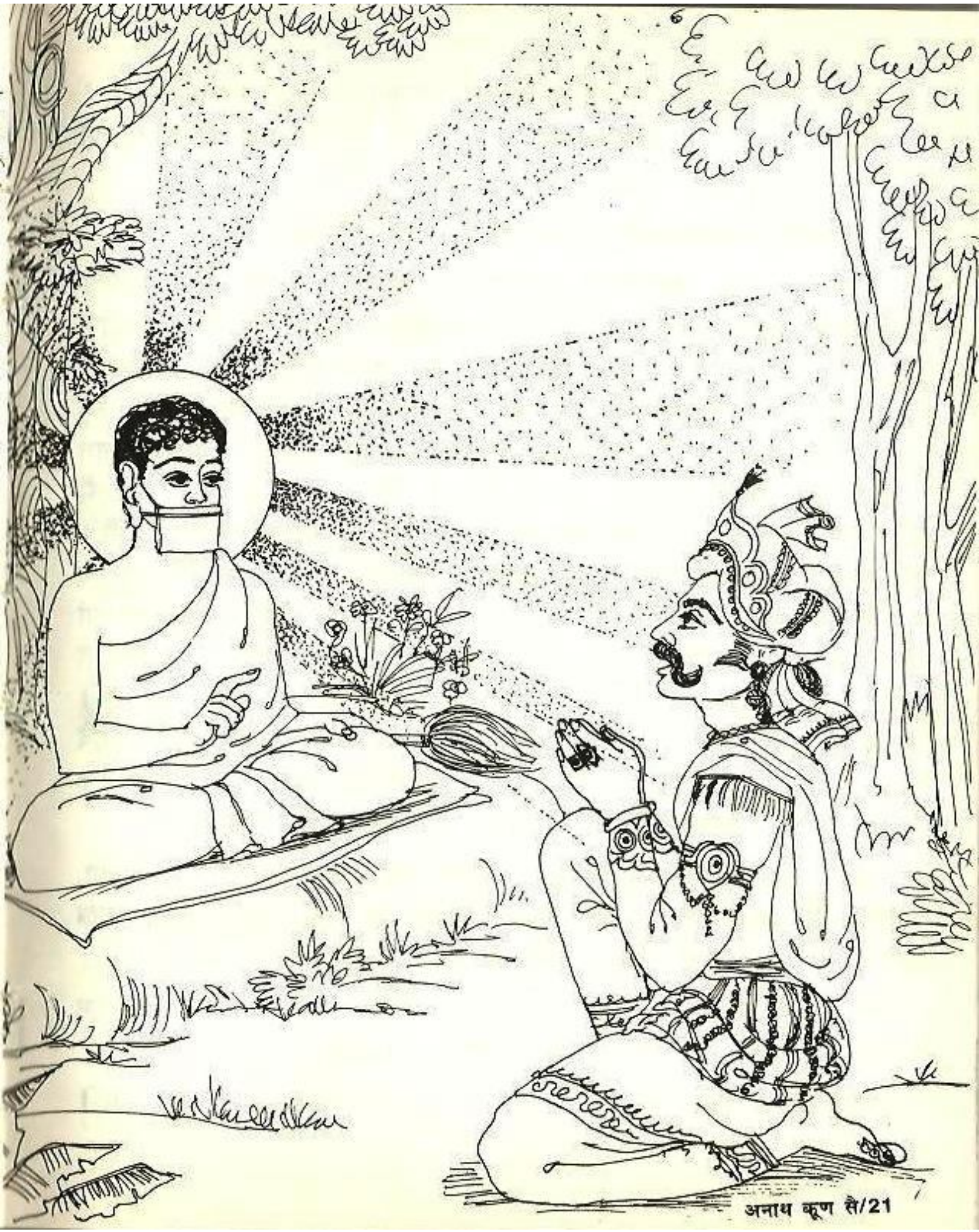

"कोए टैम था, जिब मैं भी संसार की चिमक मैं बौल़ा हो रह्या था। मेरे भी धन-दोलत थी, नोकर-चाक्कर थे, किसे भी चीज की कमी ना थी पर एक दन.... साधू नै बात आद्धम छोड दी।"

"पूरी बात बताओ जी।" राज्जा नै बेनती करी।

"एक दन मेरी आंख्यां मैं तकलीफ हो गी। दूर-दूर तै बैद बलाए। रपिया-पीसा घणा-ए लाया। मेरे मां-बाप, भाई-बाह्ण, रिस्ते-नात्ते मेरी तकलीफ तै दुखी थे पर कोए मन्नैं ठीक नहीं कर सके। मन्नै मैसूस कर्‌या, अक मैं अनाथ सूं। मेरी तकलीफ तो किस्से के भी बस की कोन्यां थी। मन्नै न्यू लाग्या, अक इस दरद नैं कोए ओर ठीक कोन्यां कर सकदा। ऊसी हालत मैं, मैं कती अनाथ बरगा था। मेरे घर के भी अनाथ थे। मेरे जी मैं आई- एक यो सरीर तै खतम होणा सै। सब कुछ सै तै बस आतमा-ए सै। मन्नै सरीर का ध्यान छोड के नै, आतमा का ध्यान करणा चहिए। न्यूं-ए सोच्चण लाग रह्या था अक मन्नैं नींद आ गी। मैं तड़कैं उठ्‌या। मेरी आंख्यां की बेमारी ठीक हो गी थी। फेर मैं आतमा की सच्चाई टोह्ण खातर घर तै लिकड़ आया। अर साधू बण ग्या। ईब मन्नैं सच्चाई का बेरा काढ़ लिया सै। आतमा-ए नाथ सै। ओए साच्चा साथ्थी सै। धन-दोलत अर मस्हूरी कद्‌दे किस्सें के भी साच्चे हमदरद कोन्यां होए। जै मेरी बातां तै थम नैं तकलीफ होई हो तै मन्नै छिमा करियो।" न्यूं कह कै साद्‌धू चुप्प हो गे।

राज्जा सरेणिक का सारा नसा झड़ लिया था। ओ हाथ जोड़ कै बोल्या, "आज तै मैं आपणे-आप नैं घणी किसमत आल़ा जाणूं सूं। थम नैं मेरी आंख खोल दी?" न्यू कह कै राज्जा साद्‌धू के पायां मैं पड़ ग्या।

साद्‌धू तै ग्यान ले कै सरेणिक उलटा आया। उस दन तै ओ धरम नैं मान्नण आल़ा अर दया करण आल़ा बण ग्या।

ग्यान देण आल़े उस साद्‌धू का नां अनाथी मुनि था। ❑❑

छिमा की मूरत

राजगीर मैं एक माल़ी रह्या करदा। उसका नां अरजन था। नगरी तै बाह्र उसका एक सुथरा-सा बाग था। उसमैं भांत-भांत के घणे-ए फूल खिल्या करदे। माल़ी उन फूलां नै बजार मैं बेच कै आपणा गुजारा कर्‌या करता।

बाग मैं एक देवतै का मंदर भी था। माल़ी नित्त नेम उसकी पूज्जा कर्‌या करता। देवतै का नां था- मुद्‌गरपाणी। उसके हाथ मैं हर टैम मोदगर रह्या करता। जाएं तै उसका नां मुद्‌गरपाणी पाक ग्या था। सरू तै ए माल़ी उस नै आपणा दाद्‌दालाही देव मान्या करदा, अर पूज्या करता।

एक बर की बात सै। छै दुसट आदमी उसके बाग मैं बड़गे। माल़ी आपणी घरआल़ी गेल्लां फूल कट्‌ठे करै था। माल़ी की घरआल़ी का रूप देख कै दुष्टां के जी मैं पाप आ ग्या। उनका जी कर्‌या, अक इसकी घर आल़ी नैं कितै ले चाल्लैं।

माड़ी वार पाछै माल़ी देवतै की पूज्जा करण खात्तर मंदर मैं गया। दुष्टां नै ओ ओड़ै-ए पाकड़ लिया, अर जेवड़ी गेल्यां जूड़ दिया। फेर उसकी घर आल़ी तै भूंडा ब्योहार करण लाग गे। न्यूं देखकै माल़ी का खून उबाल़ा खा ग्या। उसनैं जेवड़ी तै छूट्‌टण की घणी-ए कोसिस करी पर ओ छूट ना सक्या।

जिब माल़ी की कोए पार ना बसाई तो उसनै देवता याद कर्‌या। भित्तर-ए-भित्तर कही, अक, "तेरी आंक्खां आग्गै मेरी घर आल़ी गेलां दुसट

यो भूंडा ब्यौहार करण लाग र्‌हे सैं, अर तू बोलबाला लखावै सै? कै साल तै मैं तन्नैं पूज्जण लाग र्‌ह्या सूं। फेर भी तू मेरी घर आळी का पांडा इन दुसटां तै नहीं छुटवा सकदा। तेरे देवता होण का, अर कई बरस तै तन्नै पूज्जण का, मन्नैं के फैदा होया? जै तेरे भित्तर सक्ती सै तै तू मन्नैं सक्ती दे जिसतैं मैं आपणी घर आळी नैं बच्या सकूं, अर इन दुष्टां नै इनकी करणी का सुआद चखा द्यूं।" न्यू कहते-ए ओ देवता माळी के सरीर मैं बड़ ग्या। बड़तें-ए उसके सरीर मैं बेतदाद ताकत आ गी। अंगड़ाई लेंदे-ए जेवड़ी टूट गी। माळी छूट ग्या। गुस्से मैं भर कै उसनैं, दे मोद्‌गर अर दे मोद्‌गर, वे छैऊं दुसट अर आपणी घर आळी मार गरे।

गुस्सा इतणा टाड्‌डा था अक माळी हमेस्सां खात्तर बैहक ग्या। उसके सामीं जो कोए आत्ता उस्सै नैं ओ मार देंदा। ईब यो उसका रोज का-ए काम होग्या। उसनैं कसम खा ली-आए दन मैं छह मरदां नैं अर एक लुगाई नैं जरूर मारूंगा। सारी नगर मैं रोहा-राट माच ग्या।

राज्जा नैं चिन्ता होई। राज्जा सरेणिक नैं आपणे करमचारियां तै या सिमस्या हल करण की कही, पर कोए भी कामयाब कोन्यां होया। फेर यो फैसला होया-नगर के कुआड़ दन-रात बंद राक्खो, जिसतैं अरजन माळी नैं नगरी मैं बड़ण का ए मोक्का ना मिल्लै। राज्जा के हुकम तैं नगर के कुआड़ मार दिए। अर न्यू करदे- करदे छह म्हीने बीत गे।

करम कर कै, एक दन भगवान महावीर ओड़ै पधार गे। नगर के बाह्‌र वे बाग मैं ठैर गे। ओ बाग राज्जा का था। नगरी के लोग्गां नैं बेरा पाट्‌या तो सबनैं बंदना करण की सोच्ची पर अरजन माळी के भै तै किस्से की भी नगरी के बाह्‌र जाण की हिम्मत कोन्यां पड़ी। सबनैं घरां

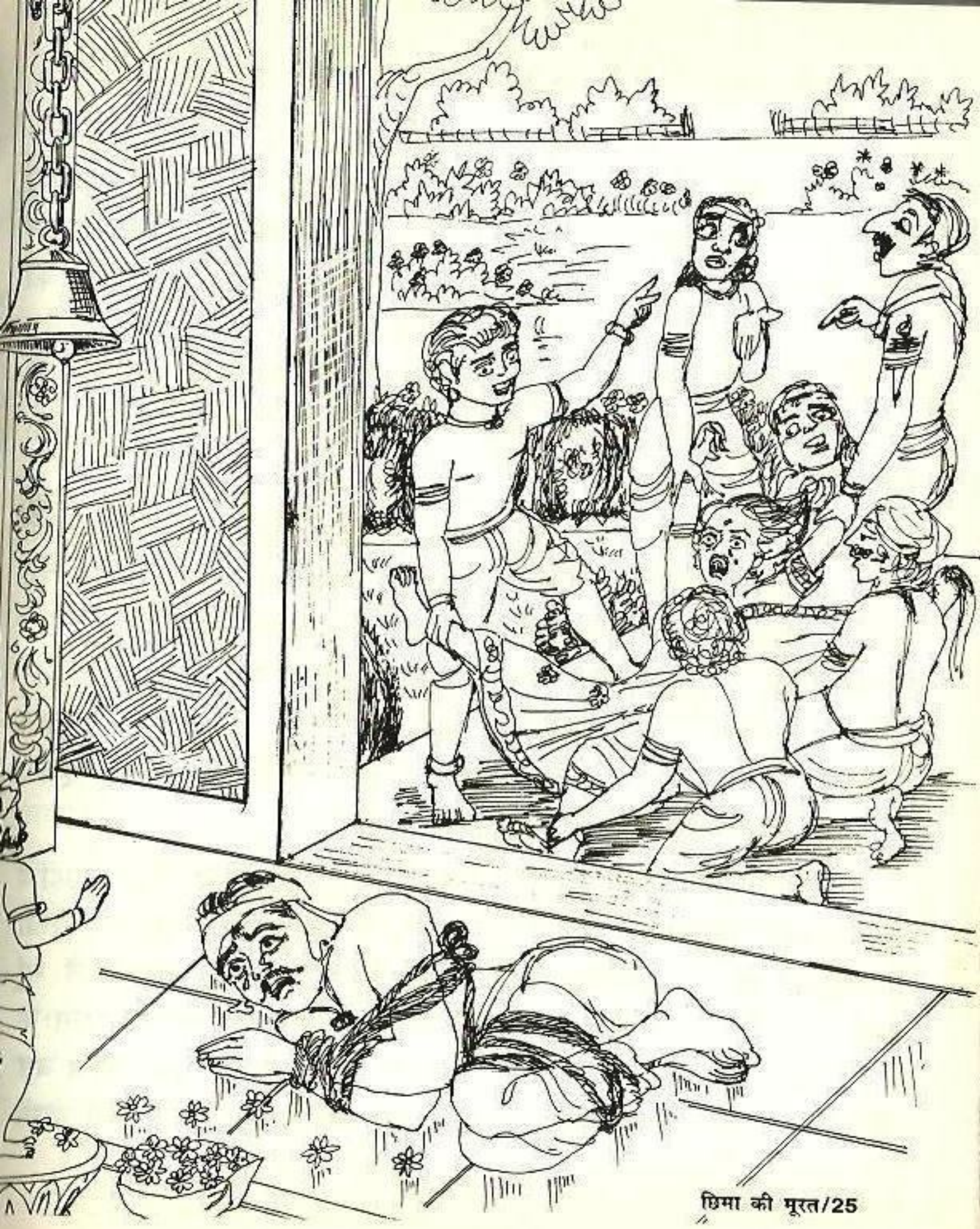

बैट्ठे-बैट्ठे, भित्तर-ए-भित्तर भगवान महावीर आग्गै हाथ जोड़ लिए।

उस नगरी मैं भगवान का एक भगत रह्या करदा। उसका नां था- सुदरसन। उसनै मां-बाप तै कही, "मैं भगवान महावीर के दरसन करण जाऊं सूं। मन्नैं आग्या द्यो।" न्यूं सुण कै मां-बाप नैं उसतै अरजन माली के खतरनाक कारनाम्मे बताए, अर उस तै घरां-ए बैट्ठै रैह्ण की रै दी। सुदरसन नैं कही, "भगवान महावीर पधारैं अर मैं उनके दरसन ना कर कै, घरां-ए पड्या रहूं, या मेरे बस की बात कोन्यां। चाहे मन्नैं मरणा पड़े पर मैं भगवान के दरसन करण जरूर जांगा।" न्यूं कह् कै ओ बाग कान्नीं चाल पड्या।

अरजन माली नैं सुदरसन आता दीख्या। उसनै मोद्गरा तणा लिया। सोच्चा– घणे दन पाछे यो सिकार हाथ आया सै। ओ आग्गै चाल्या। सुदरसन नैं अरजन आंदा दीख्या। ओ सिमझ ग्या, ईब मुसीबत आण आली सै। इस टैम भगवान का सुमरण करणा चहिए। फेर सुदरसन जमीन पै पलोथी ला कै बैठ ग्या। उसनैं ओड़े तै-ए भगवान महावीर की बंदना करी/अर भित्तर-ए-भित्तर नमोक्कार मंतर पड्ढण लाग्या। उसके भित्तर पहाड़ बरगी शान्ती थी।

गुस्से मैं भर कै हाथ मैं मोद्गर तणाएं अरजन तौला-सा ओड़ै-ए पहोंच लिया। उसनैं सुदरसन पै मोद्गर खैंच के मारण की कोसिस करी, पर देक्खो ताज्जब की बात.... अरजन का हाथ हवा मैं-ए थम ग्या। पहल्यां तैं न्यूं कद्दे ना होई थी। उसनैं आपणी पूरी ताक्कत अजमा ली पर सुदरसन कै मोद्गर लाग्या कोन्यां। आक्खर मैं अरजन माली के सरीर मैं जो देवता बड़ र्‌ह्या था, उसकी ताक्कत धरम की मूरत बणे होए सुदरसन के आग्गै हीणी

पड़गी। देवता अरजन माली नैं छोड के चाल्या गया।

माली बेहोंस हो के ढे पड्या। सुदरसन नै ध्यान खोल्या।जमीन पै पड्या होया अरजन ठाया। अरजन नैं जिब होंस आई तै आपणी आंक्खां आग्गै सुदरसन के रूप मैं धरम-ए खड्या दीख्या।

उसनैं सुदरसन तै बूज्झी, "थम कुण सो? कित रहो सो?"

सुदरसन नैं जुआब दीया, "मैं एक जैन सरावक सूं। राजगीर मैं रह्या करूं सूं। ईब भगवान महावीर के दरसन करण जां सूं।"

अरजन के मन मैं ख्याल आया– जिन का भगत इतणा पहौंच्या होया सै, अर उस तै देवता की ताक्कत भी हार गी, तै उसके गरू कितणे पहौंच्चे होए होंगे। हुमाये मैं भर के उसनैं बूज्झ्या–"मैं भी भगवान महावीर के दरसन कर सकूं सूं के?"

"हां....हां! कर क्यूं ना सकै! चाल मेरी गेल्लां।" सुदरसन बोल्या, "भगवान महावीर सब नैं सरण दिया करैं सैं। वे तेरा भी किल्लाण करैंगे।" फेर अरजन नैं ले के सुदरसन भगवान महावीर के चरणां मैं गया। दूर-दूर के लोग्गां नैं यो चिमत्कार देख्या। सुदरसन के ब्योहार तै अरजन क्यूकर बदल ग्या, सारे या बात जाणना चाह्वैं थे। वे भी सारे-के-सारे भगवान महावीर के चरणां मैं पहौंच गे।

भगवान नैं अरजन माली तैं अर ओड़ै कट्ठे होए सारे लोग्गां तैं धरम की बाणी सुणाई। भीड़-ए-भीड़ "भगवान महावीर की.....जै' के नारे लाण लाग्गी अर जै-जैकार तै चारूं दिसा गुंजा दी। आए होए लोग आप-आपणे घरां नैं चाले गए। अरजन नैं भगवान तै बुज्झ्या, "भंते! मेरे